Chapter – 1

व्याकरण

'भाषा' शब्द भाष धातु से बना है, जिसका अर्थ है- बोलना। मनुष्य जिन ध्वनियों को बोलकर अपनी बात कहता है- उसे भाषा कहते हैं। अतः हम भाषा की परिभाषा इस प्रकार से दे सकते हैं

अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर या पढ़कर प्रकट करने के साधन को 'भाषा' कहते हैं।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप होते हैं- मौखिक और लिखित

मौखिक भाषा – भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर उसे समझता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। उदाहरण– टेलीफ़ोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि।

लिखित भाषा – भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति अपने विचार या मन के भाव लिखकर प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसकी बात समझता है, लिखित भाषा कहलाती है। उदाहरण पत्र, लेख, समाचार-पत्र कहानी, जीवनी आदि।

मौखिक भाषा – भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति बोलकर विचार प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति सुनकर उसे समझता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। उदाहरण– टेलीफ़ोन, दूरदर्शन, भाषण, वार्तालाप, नाटक, रेडियो आदि।

लिखित भाषा – भाषा का वह रूप जिसमें एक व्यक्ति अपने विचार या मन के भाव लिखकर प्रकट करता है और दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसकी बात समझता है, लिखित भाषा कहलाती है। उदाहरण पत्र, लेख, समाचार-पत्र कहानी, जीवनी आदि।

भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है; जैसे- हिंदी, असमिया, बंगाली, डोगरी, बोडो, उर्दू, नेपाली, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मराठी, मणिपुरी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, तमिल, सिंधी और तेलुगू।
14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई और केंद्रीय सरकार के काम-काज के लिए अनिवार्य घोषित कर दी गई।
मातृभाषा वह भाषा जिसे बालक अपने परिवार में अपनाता व सीखता है, वह मातृभाषा कहलाती है।

बोली – भाषा का मौखिक रूप बोली कहलाता है। यह सीमित अथवा बहुत कम क्षेत्रों में बोली जाती है। इसमें साहित्य की रचना नहीं की जाती है। मैथिली, राजस्थानी, बुंदेलखंडी आदि कई बोलियाँ है जिनका प्रयोग भारत के विभिन्न भागों में किया जाता है।

लिपि – मुख से निकली ध्वनियों को लिखने की विधि या चिह्न को लिपि कहते हैं।
संसार की विभिन्न भाषाओं को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। संस्कृत, हिंदी, मराठी, भाषाएँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।

व्याकरण – भाषा को शुद्ध रूप में लिखना, पढ़ना और बोलना सिखाने वाला शास्त्र व्याकरण कहलाता है।
व्याकरण में भाषा के वर्ण, शब्द, पद तथा वाक्य पर विचार किया जाता है। इस आधार पर इसके चार अंग होते हैं।

1. वर्ण विचार
2. शब्द विचार
3. पद विचार
4. वाक्य विचार

cgqfodYih; iz'u

1- ge ckrphr fdl ek/;e ls djrs gS\

i. fyfi

ii. okD;

iii. Hkk"kk

iv. o.kZ

2- Hkk"kk ds fdrus :i gksrs gS\

i. fyf[kr

ii. lkadsfrd

iii. ekSf[kd

iv. lHkh

3- Hkk"kk ds fdrus :i gksrs gS\

i. nks

ii. pkj

iii. rhu

iv. ikap

4- fgUnh dh fyfi dkSu&lh gS\

i. Qkjlh

ii. jkseu

iii. xq:eq[kh

iv. noukxjh

5- ge fdld }kjk Hkk"kk d 'k) :i dk Kku gkrk g\

i. 'kCn

ii. fyfi

iii. 0;kdj.k

iv. okD;

6- Hkk"kk dk vFk g&

i. Eku d Hkko ldr d }kjk idV djuk

ii. Eku d Hkko doy ckydj idV djuk

iii. Eku d Hkko doy fy[kdj idV djuk

iv. Eku d Hkko ckydj ;k fy[kdj idV djuk

7- okD; fdl dgr g\

i. 'kCn leg dk

ii. o.k leg dk

iii. oxk d ey dk

iv. 'kCnk d lkFkd ey dk

***

Grammar वर्ण विचार

वर्ण – वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड (टुकड़े) नहीं किए जा सकते; जैसे- अ, इ – क, चु, ख, र इत्यादि।
वर्ण के भेद – वर्ण के दो भेद होते हैं-

1. स्वर
2. व्यंजन

वर्णमाला – वर्णों के व्यवस्थित रूप को वर्णमाला कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है। हिंदी वर्णमाला में ग्यारह स्वर और 33 व्यंजन हैं।

1. स्वर – जिन वर्णों को बोलने के लिए अन्य ध्वनियों का सहारा नहीं लेना पड़ता, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वरों के उच्चारण में हवा हमारे मुख से बिना किसी रुकावट के निकलती हैं। हिंदी में ग्यारह स्वर हैं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

2. व्यंजन – जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन के उच्चारण में 'अ' स्वर की सहायता लेनी पड़ती है।

Chat with us on WhatsApp

2. व्यंजन – जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन के उच्चारण में 'अ' स्वर की सहायता लेनी पड़ती है।

जैसे-

स्वर के भेद

उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वरों के तीन भेद होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर
3. प्लुत स्वर

मात्राएँ

स्वरों के लिए निर्धारित चिह्न मात्राएँ कहलाती हैं।

'अ' स्वर के अतिरिक्त सभी स्वरों के मात्रा चिह्न होते हैं।

स्वर	मात्रा	वर्ण मात्रा के साथ		प्रयोग	मूल रूप
अ	मात्रा नहीं	क + अ = क	=	कमल, कर	अमरूद, अगरबत्ती
आ	ा	क + आ = का	=	काला, कपड़ा	आम, आग
इ	ि	म + इ = मि	=	मिठाई, मिठास	मित्र, मिलान
ई	ी	स् + ई = सी	=	सीख, सीमा	ईख, ईद
उ	ु	क् + उ = कु	=	कुली, कुम्हार	कुदाल, कुमार
ऊ	ू	च् + ऊ = चू	=	चूना, चूरमा	ऊन, ऊँट
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ	=	कृषि, कृष्ण	ऋषि, ऋण
ए	े	ठ् + ए = ठे	=	ठेला, ठेस	एड़ी, एकता
ऐ	ै	म् + ऐ = मै	=	मैला, मैच	ऐनक, ऐरावत
ओ	ो	क + ओ = को	=	कोयल, कोमल	कोमल, कोरा
औ	ौ	क + औ = कौ	=	कौन, कौतूहल	औरत, औकात

अनुस्वार और विसर्ग – हिंदी वर्णमाला के अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) को 'अ' के साथ जोड़कर 'अं' और अ: लिखा जाता है। और प्रायः इन्हें स्वरों के साथ रखा जाता है क्योंकि इनका उच्चारण स्वरों के साथ ही होता है; जैसे- गंगा, चंदा, प्रात:, अतः आदि। परंतु ये स्वर नहीं हैं। संस्कृत में इन्हें 'अयोगवाह' कहा जाता है क्योंकि ये 'अ' की सहायता से ही बोले जाते हैं।

अनुनासिक – इनका उच्चारण नाक और गले दोनों से होता है; जैसे- चाँद, गाँधी, आँगन, आदि इसका चिह्न (*) होता है। अनुस्वार वर्णमाला के पंचम वर्ण के स्थान पर प्रयोग में आता है।

विसर्ग (:) – यह 'ह' के समान उच्चारित होता है; जैसे- चाँद, साँस, हँस आदि। अनुस्वार और अनुनासिक के उच्चारण में यदि ध्यान न रखा जाए तो हँस (क्रिया शब्द) हँस (पक्षी) बन जाएगा।

हलंत – जब व्यंजन वर्ण स्वर के बिना लिखे जाते हैं तो हलंत ( ) का प्रयोग होता है, जैसे क् च् ट् आदि।

अर्ध चंद्र – यह विदेशी ध्वनि जिसे आगत नाम से जाना जाता है। इसका प्रयोग अंग्रेजी भाषा के शब्दों में किया जाता है; जैसे-डॉक्टर, ऑफ़िसर, कॉलोनी, कॉफ़ी आदि।

व्यंजन के भेद

व्यंजन के तीन भेद हैं-

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. भाषा की सबसे छोटी लिखित इकाई है

(i) पद

(ii) वाक्य

(iii) शब्द

(iv) वर्ण

2. इनमें से कौन-सा स्वर नहीं है

(i) अ

(ii) ओ

(iii) ऊ

(iv) ज

3. इनमें से कौन-सा व्यंजन नहीं है

(i) क

(ii) च

3. इनमें से कौन-सा व्यंजन नहीं है

(i) क

(ii) च

(iii) ट

(iv) ए

4. 'स्वर' वर्गों के कितने भेद होते हैं

(i) तीन

(ii) चार

(iii) छह

(iv) सात

5. हिंदी में व्यंजनों की संख्या कितनी है

(i) सैंतीस

(ii) छत्तीस

(iii) अड़तीस

(iv) पैंतीस

6. जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगे, वे कहलाते हैं

(i) स्वर

6. जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगे, वे कहलाते हैं

(i) स्वर

(ii) व्यंजन

(iii) मात्रा

(iv) प्लुत स्वर

7. जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों को छूती है, वे हैं

(i) संयुक्त व्यंजन

(ii) स्पर्श व्यंजन

(iii) ऊष्म व्यंजन

(iv) इनमें से कोई नहीं

8. एक से अधिक व्यंजन जब जोड़कर बोले या लिखे जाते हैं वे कहलाते हैं

(i) स्वर

(ii) व्यंजन

8. एक से अधिक व्यंजन जब जोड़कर बोले या लिखे जाते हैं वे कहलाते हैं

(i) स्वर

(ii) व्यंजन

(iii) संयुक्ताक्षर

(iv) इनमें से कोई नहीं

9. विसर्ग का चिह्न है

(i) (ʻ)

(ii) (ँ)

(iii) (:)

(iv) (,)

10. स्वरों के उच्चारण में सहायता लेनी पड़ती है

(i) स्वर की

(ii) व्यंजन की

(iii) मात्रा की

(iv) किसी की नहीं

उत्तर-

1. (iv)

2. (iv)